लोक नाट्य – तेय्यम

डॉ. वी. के सुब्रह्मण्यन

आचार्य, हिन्दी विभाग

कालिकट विश्वविद्यालय

केरल

आदिम मनुष्य का जीवन ही स्वयं एक कला थी। उनके सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब उनकी लोक - कलाओं की प्रस्तुति में मिलता है। 'लोक – कला', 'अनुष्ठान कला' आदि नाम से इनको जाना जाता है। आम लोगों के जीवन के संदर्भ में ये कलाएँ अपने जीवन के प्रति अवबोध पैदा करनेवाली है। जैसे आचार – विचार, अनुष्ठान, त्योहार, आराधना, विश्वास आदि उनके जीवन से जुड़े हुए हैं वैसे ये कलाएं भी उनके जीवन की अंतरंग पहचान करानेवाली हैं। अतः लोक कलाएँ लोक जीवन के साथ घुल मिल रहती है ।

लोक कलाओं के संदर्भ में और उसकी प्रस्तुति में केरल में एक लंबी परंपरा रही थी। लगभग सभी कलाएँ किसी धार्मिक अनुष्ठान केलिए या देवताओं की आराधना के लिए या त्योहार के लिए प्रस्तुत की जाती थी। इनका अवतरण लोक मंदिरों के सामने और इनके आसपास के घरों में किया जाता था। ये कलाएं ज्ञानार्जन केलिए, भक्ति केलिए और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी प्रस्तुत की जाती थी जो यहां रहते मनुष्य के जीवन के इतिहास की ओर प्रकाश डालती है। लेकिन खेद की बात है कि लोक कलाओं में कुछ कलाएँ अब तक नष्ट हो गई है। लेकिन कुछ कलाएँ चाहे परिवर्तित होकर भी क्यों न हो आज भी प्रचलन में है। लेकिन बहुत कम कलाएँ ऐसी है जो आज भी बिना परिवर्तित हुए अपनी अस्मिता की रक्षा करती हुई जीवित रहती है।

केरल राज्य की प्रौढ संस्कृति को रूप देने के लिए अनुष्ठान - कलाओं की बहुत बडी भूमिका रही है। उत्तर केरल और दक्षिण केरल में कई प्रकार की अनुष्ठान कलाएं प्रचार में है। इनमें उत्तर केरल की एक लोकप्रिय कला है 'तेय्यम' । यह केरल की अपनी संस्कृति की जीवंतता को बनाए रखती है। 'तेय्यम' की एक लंबी परंपरा केरल में रही है और यह अपनी अस्मिता में और प्रस्तुति में अति सुंदर भी है। इसकी एक बहुत बडी विशेषता यह है कि इसके कलाकार निम्न जाति से आनेवाले हैं विशेषकर 'मलयन', 'वण्णान', 'वेलन', ' माविलन', 'पाणन', 'पुलयन' आदि। वास्तव में तेय्यम इन जातियों की परंपरागत कला और सांस्कृतिक संपत्ति है । इस कला के अवतरण के लिए विशेषकर केरल में पंद्रह से ज्यादा जातियाँ काम कर रही है। उत्तर केरल के 'कसरगकोड़', 'कन्नूर', 'वायनाडु', 'कोषिको डु', 'मलप्पुरम' आदि जिलाओं के अधीन आनेवाले भौगोलिक प्रदेशों में अनेक कलाकार इस कला के लिए काम करते हैं जो इस कला को अपने प्राण के समान परिलालित और परिपोषित करते हुए इसकी रक्षा करते हैं । पर, खेद की बात यह है कि पर्याप्त संरक्षण या प्रोत्साहन सरकार की ओर से लोक कलाओं केलिए नहीं मिलते हैं।

तेय्यम माने नाचनेवाला देवता । मुख्य रूप से माता देवता ही तेय्यम कला के अंतर्गत आता है। इसके अलावा वीर पुरुषों के लिए भी तेय्यम किया जाता है। तेय्यम की संख्या का आंकड़ा यह मिलता है कि लगभग पांच सौ से अधिक तेय्यम अब तक सूची में है। देवता के रूप को धारण कर कलाकार इसमें नाच गाकर अभिनय करता है। ऐसा विश्वास है कि देवता इस कलाकार के अंदर प्रवेश करता है जब तेय्यम का पोशाक पहनकर नाचना गाना शुरु करता है। इसके अलावा 'तिरा' शब्द भी तेय्यम के अर्थ को प्रकट करने वाला है। 'कोषिकोड', 'वायनाडु' आदि जिलाओं के अधीन आनेवाले प्रदेशों में तेय्यम जैसी कला को 'तिरा' नाम से पुकारा जाता है। तिरा शब्द की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों के बीच कई मत प्रचलन में हैं। एक मत यह है कि लकड़ी के फलक के द्वारा तैयार किया गया एक बडा किरीट जो कलाकार अपने सिर पर रखकर नाचता है, इसी कारण से इसे 'तिरा' बताया गया है । (१) डॉ गुंडरट 'तिरा' शब्द को समर्पण के अर्थ में लेते है।(२) लेकिन कुछ विद्वान 'तिरा' केलिए 'ईश्वर का दर्शन करना' अर्थ मानते हैं।(३) इस प्रकार 'तिरा' केलिए देवता को प्रत्यक्ष करना, देवता का दर्शन करना, देवता के लिए अर्पण करना आदि अर्थ दिया जा सकता है। तेय्यम

और तिरा संज्ञा के अलावा दूसरा एक शब्द भी प्रचलन में है, वह है ' तोट्टम'। ' तोट्टम' की प्रस्तुति में कलाकार देवता का निर्धारित पोशाक पहनकर 'कावू' (लोकमंदिर), 'देवता - स्थान', 'पल्लियरा' (देवमंदिर) के सामने लोक गीत गाता है, बाजा बजाता है, गीत के साथ नाचता है और अंत में नाच की तीव्रतर स्थिति में पहुँच जाता है। ' तोट्टम' शब्द केलिए 'स्तोत्र' का अर्थ भी दिया जाता है। डॉ गुंडरट के मतानुसार तोट्टम शब्द केलिए सृजन करना, पुनः जीवित रखना, महसूस होना आदि अर्थ भी रहते (४) तोटम के दो भेद माने जाते हैं। क) उच्च' तोट्टम' ख)अंत्य ' तोट्टम' ये दोनों संज्ञाएँ ' तोट्टम' की प्रस्तुति की शुरुआत को सूचित करते हैं। इसके अलावा, और एक रूप भी तेय्यम का मिलता है जिसे "वेल्लाट" कहते है। वेल्लाट के संबंध में भी विद्वानों के बीच एक मत नहीं रहता है। डॉ अच्युतमेनन की राय में उस नृत्य को 'वेल्लाट' कहते है जिसमें कलाकार के शरीर पर उबलता हुआ चावल के आटे को डाल दिया जाता है,(५) उस समय कलाकार तीव्रतर ताल -लय के साथ भावविभोर होकर नृत्य करता है। लेकिन डॉ गुंडर्ट, 'वेल्लाट' शब्द के लिए 'a solaman dance' बताया है।(६)

इसी प्रकार की ही एक प्रसिद्ध अनुष्ठान - कला है , 'कलियाट्टम' जो उत्तर केरल के बड़े बड़े घरानों और मंदिरों के सामने पूर्व निश्चित तारीख पर आयोजित किया जाता है। इस कला को प्रस्तुत करने केलिए चुने गए कलाकार तन और मन को शुद्ध करने के लिए व्रत लेते है। कलाकार को मन और शरीर को शुद्ध करके स्वयं अपने को तैयार करना है। व्रत लेते समय कलाकार अपने घर से अलग रहते है और शाकाहार का पालन करते हैं। इस कला की प्रस्तुति के दौरान कलाकार को कभी जलते लकडी के टुकडों के ढेर पर चलना होता है, कृत्रिमतः तैयार किए गए भारी बाल सिर पर रखकर नाचना होता है, शरीर से रक्त को बहाना पड़ता है और बड़े बड़े मशालों को कमर पर बांधकर नाचना पड़ता हैं जिनकेलिए व्रत और अनुष्ठान सहायक सिद्ध होते हैं।

तेय्यम की प्रस्तुति की तैयारी के पहले कुछ रीति - रिवाजों का पालन किया जाता है। इसमें सबसे पहले प्रदेश वासियों को सूचना देने का कार्यक्रम चलता है। तेय्यम को खेलने के लिए तारीख तय किया जाता है और तेय्यम का अवतरण करने के लिए कलाकार को भी इस समय निश्चित किया जाता है। अगर तेय्यम के लिए व्रत लेना पड़ता है तो अब से व्रत का पालन करना शुरू किया जाता है। इस समय कलाकार सिर्फ बाजरा का भोजन ही करता है। तेय्यम खेलने के पूर्व दिन में ही सभी कलाकार और वाद्य – संघ निश्चित स्थान पर पहुंच जाते हैं। कलाकार को सजाने केलिए विशेष कमरा तैयार किया जाता है। साज-सज्जा किए जाने के बाद कलाकार आईने के सामने आकर खड़ा हो जाता है। ऐसा किए जाने के पीछे यही संकल्प रहता है कि कलाकार खुद अपने को मान ले कि वह देवता ही है और कलाकार को यह घटना उत्तेजित भी करती है। देव मंदिर के अंदर से अनुष्ठान के रूप में जब चावल फेंक दिया जाता है तब कलाकार अतितीव्र नृत्य करना शुरु करता है।

तेय्यम की वेशभूषा विशेष रूप से तैयार किया जाता है। इसके लिए विशेष साज-सज्जा रहती है जिसे 'अणियम्बलम' कहते हैं । वेशभूषा के द्वारा तेय्यम, देवता की पहचान प्राप्त करता है। इसके लिए तेय्यम के मुख को कई वर्णों से सजाया जाता है । देवता की गंभीरता, चैतन्य और शक्ति को तेय्यम की सजावट के द्वारा ही पैदा किया जाता है। वास्तव में नर को देवता में रूपांतरित करने के लिए साज-सज्जा का इस्तेमाल किया जाता है। कहा जाता है कि 'मक्काडन गुरिक्कल' (तेय्यम – कलाकार) और 'कोलत्तिरी राजा' (उत्तर केरल का राजा) दोनों मिलकर ही तेय्यम में सुधार लाए है। तेय्यम की वेशभूषा जो प्रकृति, वातावरण और देवता की कल्पना को रूप देने के लिए तैयार किया गया है। तेय्यम की साज-सज्जा में कृत्रिम बाल, मुख पर लगाने के लिए विविध वर्णी चूर्ण, पहनने के लिए कृत्रिम अभूषण, कमर पर पहनने के लिए विशेष कपड़े, पैर और हाथ में पहनने के लिए विशेष प्रकार के आभूषण और कई तरह के हथियार का उपयोग किया जाता है।

तेय्यम के मुख पर जो सजवाट की जाती है वह, अति सूक्ष्म और वैविद्य पूर्ण है। बहुत पतली रेखाओं को खींचकर प्रतीकात्मक ढंग से इसको बनाया जाता है। मुख की सजावट के आधार पर ही 'पुरुष देवता' तेय्यम और 'स्त्री देवता' तेय्यम का भेद किया जाता है। लगभग 40 से अधिक शैलियाँ मुख सजावट के लिए प्रचार में हैं। इसके अलावा कई तरह की सजावट शरीर पर भी की जाती है।

इसके अलावा तेय्यम के द्वारा प्राचीन केरल के सामाजिक जीवन की विडंबनाओं पर भी आलोचना करने की भूमिका निभायी गयी थी। उस समय 'कावु' (लोक – मंदिर) ही सत्ता का केन्द्र था और न्यायालय का काम करता था। तेय्यम के द्वारा ही कई अनकहे

सत्य बताए जाते थे और कुछ सामाजिक दायित्व प्रदेशावासियों को सौंप दिए जाते थे। दरअसल तेय्यम लोगों के जीवन में कल्याण के लिए पैदा हुए है। पंचायत और न्यायालय के कार्य को उस समय तेय्यम ने ही निभाया था जब पंचायत और न्यायालय पैदा नहीं हुए थे। जब अन्याय और पीडाएँ लोगों के जीवन में आ जाती हैं तब निरीह जनता तेय्यम के आश्रय में जाती थी। चोरी जैसे अपराध का पता करने के लिए 'पोट्टन तेय्यम ' माहिर था। 'करिचामुण्डी' और 'रक्तचामुण्डी: जैसे तेय्यम दुष्टों के निग्रह के लिए नामी है। युद्धवीरों के नाम पर प्रस्तुत तेय्यम व्यक्ति और समूह की रक्षा करता है। ऐसे, तेय्यम कई दृष्टियों से समाज सुधार से जुड़े हैं।

प्रत्येक तेय्यम के लिए अपनी अपनी अवतरण की शैली रहती है जिसको वह आंगिक भाषा के साथ नाच कर प्रस्तुत करता है। इस नृत्य को कलाकार अपने पैर, हाथ, मुख और शरीर के द्वारा प्रस्तुत करता है। नाचते समय हाथी का गमन, हंसगमन, मोरगमन, कोयल गमन आदि का अनुकरण भी किया जाता है। जानवरों के गमन का अनुकरण कई तेय्यम के नृत्य के साथ रहता है।

आगे हम चंद प्रमुख तेय्यम या तिरा का अवलोकन करेंगे।

पोट्टन तेय्यम

उत्तर केरल में इस तेय्यम का खेल चलता है। इस तेय्यम के उत्भव के पीछे एक कहानी रहती है। निचली जाति के एक व्यक्ति ने उसी ज़माने में यह कहने केलिए साहस दिखाया था कि मनुष्य में जातिवादी भिन्नता नहीं है जबकि उस समय समाज में जाति व्यवस्था काफी शक्तिशाली थी। इस तेय्यम की प्रस्तुति कई जाति - समुदायों की ओर से की जाती थी। 'पोट्टन तेय्यम' दो प्रकार के होते हैं। एक, ज्वलित लकडी के टुकडे से बनाए गए ढेर पर जाकर गिरनेवाला और दूसरा इस प्रकार आग में न गिरनेवाला। इस तेय्यम की विशेषता यह है कि वह प्रश्न पूछता ही रहता है, जिनका उत्तर नहीं दिया जाता है। सिर्फ प्रश्न पूछनेवाले तेय्यम को ही पोट्टन तेय्यम कहा जाता है। पोट्टन शब्द का मलयालम भाषा में अर्थ है - बुद्धू। वास्तव में प्रश्नों को पूछकर वह यह बताना चाहता है कि अपनी जाति के ऊपर उच्च जाति का आतंग चलता है।

मुच्चिलोट भगवती तेय्यम

यह 'वाणिया' जाति की ओर से अवतरित करनेवाला तेय्यम है। इस तेय्यम की कथा इस प्रकार है – 'पेरिन्जल्लूर' गाँव में एक ब्राह्मण कन्या के द्वारा श्रृंगार रस के सम्बन्ध में बात करते हुए पाया गया था। इसके कारण उसे अपनी जाति से निकाल दिया गया था। वह इधर उधर भटककर अंत में ' करिवेल्लूर ' शिव के मन्दिर आयी और प्रार्थना की। फिर उसने स्वयं एक अग्निकुंड को तैयार किया और उसमें कूदकर आत्महत्या करने के लिए तैयार हो गयी। तब एक 'वाणिया' जातिवाला तेल लेकर मंदिर जाता दिखाई दिया। उससे ब्राह्मण कन्या ने कहा कि तेल अग्निकुंड में डालो। उसने ऐसा किया। उस कन्या ने अग्नि में प्रवेश करके अपनी आत्मा की शुद्धि को प्रमाणित किया। खाली बर्तन लेकर ' वाणियन' जब घर पहुंचा तो खाली बर्तन में तेल अपने आप भरा हुआ पाया गया। अलावा इसके अपने कुए में एक दिव्य रूप का दर्शन भी कर सका। इस घटना से लेकर ग्रामवासियों का विश्वास यह है कि कन्या की दर्द भरी प्रार्थना शिवजी ने सुनी और शिव के अनुग्रह से वह कन्या दिव्य ज्योति बनकर भगवती बन गई है। यही मुच्चिलोट भगवती तेय्यम की कहानी है।

गुलिकन तेय्यम

उत्तर केरल के पचहत्तर प्रतिशत 'कावु' में यह तेय्यम मनाया जाता है। इसको मलय जाति अपने कुल के देवता के रूप में मानती है। जन्म और मृत्यु के देवता के रूप में भी इस तेय्यम का मुख्य स्थान रहता है। साथ ही साथ भक्तों के समस्त दोषों का निवारण भी यह तेय्यम करता है। 'गुलिकन' तेय्यम की कुल संख्या 101 माना जाता है।

कुट्टी चात्तन तेय्यम

उत्तर केरल में इस तेय्यम का बडा प्रचलन है। इसको 'कुट्टी शास्तन' तेय्यम भी कहा जाता है। 'कुट्टी' शब्द उन्नत जाति के लिए और ' चात्तन' शब्द निम्न जाति के लिए प्रयुक्त किया जाता है। दोनों का जोड है – कुट्टी चात्तन।18 ब्राह्मण परिवारों के द्वारा इसकी आराधना की जाती है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि कुट्टी चात्तन तेय्यम के साथ मंत्र की शक्ति अपार रहती है। गैर ब्राहमण जाति

के लोग भी कुट्टी चान्तन तेय्यम की आराधना करती है। चात्तन शब्द का पाली / सिंहला भाषा में अर्थ 'बुद्ध' है। ऐसा कहा जाता है कि बौद्ध मंदिरों पर हिन्दुओं ने कब्जा किया था और उन्हें हिन्दु मंदिर बनाया था। लेकिन बौद्ध मंदिरों में वर्तमान कई आचार – विचारों को हिन्दुओं ने स्वीकार किया था।

इस प्रकार प्रत्येक तेय्यम के पीछे एक कहानी या विश्वास रहते है। प्रत्येक प्रदेश के लोगों के विश्वास के साथ इसका सम्बन्ध है। सभी तेय्यम के साथ अक्सर दिव्यत्व की एक घटना रहती है और सामान्य ग्रामवासियों के जीवन को विश्वास के धरातल पर तेय्यम प्रभावित भी करता है। इनके कुलदेवता के रूप में तेय्यम रहता है। अतः उत्तर केरल के लोकजीवन के साथ तेय्यम का अपूर्व सन्निध्य है।

संक्षेप में कहें तो ये कलाएं समाज के आचार-विचार के पालन केलिए और देवता की आराधना की दृष्टि से चलाई जा रही है। लेकिन इनमें लगभग सभी कलाएं समाज की एकता को सुदृढ़ कर देने केलिए और व्यक्ति की संवेदना के स्थान पर सामाजिक संवेदना को स्थापित करने केलिए इस्तेमाल की जाती है। ये कलाएं समाज के हाशिए पर उपेक्षित निम्न जाति के लोगों के आत्मा - गौरव के प्रकाशन केलिए एक माध्यम के रूप में में भी काम करती है। विदेशियों केलिए चाहे ये सिर्फ कलाओं का रूप लगेगा, लेकिन उत्तर केरल के लोगों केलिए यह अपनी देवता -आराधना का अंग है। बड़ी पावनता याने पवित्रता के साथ ही ये इनको स्वीकारते हैं। प्रकृति, मनुष्य और ईश्वर तीनों के आपसी संबंध की अभिव्यक्ति का साधन है तेय्यम। जिन्हें देखने केलिए देश विदेश से बहुत से लोग आते है और इनके संबंध में अध्ययन भी करते हैं।

.....

१. Dr.Achuthamenon, keralathile kaliseva, p.17
२. Dr.Gundert, Malayalam and English dictionary,p.459
३. Dr. S. K. Nair, keralathile naadodi nadakangal
४. Dr. Gundert, p.494
५. Dr. Achuthamenon, p.67
६. Dr. Gundert, p.986

.....

संदर्भ ग्रंथ सूचि

१. चेलनाट्टु अच्युतमेनोन, केरलत्तिले कालीसेवा, मदिराशी सर्वकलाशाला
२. 'आरोलि.जि', तेय्यत्तिन्टे वेषत्तोडुम चमयत्तोडुम अवतरणत्तोडुम बन्धप्पेट्ट वस्तुक्कलुडे निर्माणम्, तृश्शूर केरल संगीत अकादमी
३. एट्टनुण्णि पी डी .(१९८६), मानकवेद कवि भक्तप्रिय, P. १, गुरुवायूर देवस्वम P9-15
४. कुट्टिकृष्ण मेनोन वि एम(१९३८) भूताराधनम, प्रबुद्ध भारतम, p.85-88
५. गोविन्दपिल्ले . पि(१९६५), मलयाल साहित्य चरित्रम, कोट्टयम नाषणल बुक स्टॉल
६. मेकुन्नत्त कुञ्जिकृष्णन नायर, (१९८७) तेय्यत्तिन्टे अनुष्ठानपरमाय अमशङ्ल, केरल संगीत नाटक अकादमी तृश्शूर, P10-19